Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 3 | ISSN : 2581- 6306

मेघदूतम् का भौगोलिक दृष्टि से विवेचन तात्कालिक सम्बन्ध में

वीरेन्द्र कुमार मौर्य
शोधच्छात्र – संस्कृत
शिबली नेशनल पी० जी० कॉलेज आज़मगढ़,
उत्तर प्रदेश,भारत।

सारांश – भौगोलिक अनिश्चयता का स्वाभाविक परिणाम ऐतिहासिक आस्पष्टता है । देश के विभिन्न भागों में स्थानों, पर्वतों आदि के समान नामों का होना। उदाहरणता कालिदास द्वारा उल्लिखित कोशल बौद्ध सूत्रों में उत्तर प्रदेश माना गया है। वह प्रयत्न भौगोलिक नामों, पर्वत, नदियों, पेड़-पौधों और अन्य सामग्री की यथासंभव पहचान के रूप में होगा।

मुख्य शब्द– भौगोलिक, मेघदूतम्, कालिदास, संस्कृत, पर्वत, ऐतिहासिक, नदी।

भौगोलिक सामग्री की कठिनाई – कालिदास के ग्रन्थों से उपलब्ध भौगोलिक सामग्री के अध्ययन में कुछ कठिनाइयाँ है । इनमें मुख्य कालिदास के भूगोल का पारस्परिक रूप है । भौगोलिक अनिश्चयता का स्वाभाविक परिणाम ऐतिहासिक आस्पष्टता है। अनिश्चित तिथिक्रम के कारण भौगोलिक सामग्री को ऐतिहासिक युग में रखना कठिन हो जाता है । इस संबंध में कुछ बाधाएं इस प्रकार से हैं -

देश के विभिन्न भागों में स्थानों, पर्वतों आदि के समान नामों का होना । उदाहरणता कालिदास द्वारा उल्लिखित कोशल बौद्ध सूत्रों में उत्तर प्रदेश माना गया है, पर उसी का उल्लेख दशकुमारचरित[1] में दक्षिण प्रदेश के रूप में

[1] वही० ।

हुआ है । इस प्रकार प्राचीन काल का नामकरण आम्रकुट[2] पर्वत को वर्तमान में 'अमरकंटक' पहाड़ी के नाम से जाना जाता है। इसी प्रकार 'रेवा नदी'[3] को 'नर्मदा' नदी के नाम से जाना जाता है।

इन असुविधाओं के अतिरिक्त एक दूसरी असुविधा भूगोल में परंपरागत वर्णों की भी है। जो कालिदास के भारतीय काव्यकारों के ग्रंथों में भरे पड़े हैं । ग्रंथकार के बाद ग्रंथकार, स्थान और जनों के वर्णन में बिना उनके नामों की सत्यता पर विचार किए उनकी प्राचीन नामों का प्रयोग करते जाते हैं। कभी यह विचार नहीं किया जाता कि स्थान विशेष का नाम अदल-बदल गया है या उनकी जनता पहले कि नहीं रही, आदि और इसी प्रकार पूर्व काल की भौगोलिक कल्पनाये पीढ़ी दर पीढ़ी कार्यक्रम में उतरती आती है और जब तक सदियों बाद लाक्षणिक साहित्य में भी अपने लिए स्थान कर लेती है । फिर अन्वेषक इस कारण भी कठिनाइयों में पड़ जाता है कि प्राचीन भूगोल में वास्तविक और काल्पनिक में भी अंतर नहीं डाला जाता । उदाहरणत: 'कैलाश, का दूसरा नाम कुबेरशैल[4] भी है । जिससे वह पर्वत वास्तविक से हटकर विचित्र काल्पनिक देश में जा पहुंचता है। इसी प्रकार सिद्धो, यक्षों[5], किन्नरों[6], अश्वमुखियों, किम्पुरुषों और सरभो के सामान शब्दों के प्रयोग में अपार्थिव और काल्पनिक जन विश्वासो की प्रतिष्ठा पर कठिनाई उत्पन्न कर दी गई । फिर भी आगे के पृष्ठों में कालिदास के ग्रंथों के आधार पर प्राचीन भारत का नक्शा उपस्थित करने का प्रयत्न किया जाएगा । वह प्रयत्न भौगोलिक नामों, पर्वत, नदियों, पेड़-पौधों और अन्य सामग्री की यथासंभव पहचान के रूप में होगा ।

भौगोलिक विवेचन– कालिदास ने अपने मेघदूत खण्ड-काव्य में मेघ को दूत बनाकर रामगिरी पर्वत से अलकापुरी तक अपना संदेश भेजने के लिए मेघ को मार्ग बताते हुए पर्वत, पठार, मैदान, नदियों एवं भारत के मौसम एवं जलवायु का वर्णन करते हुए अपने भौगोलिक ज्ञान का अतुलनीय परिचय दिया। उन्होंने पूर्वमेघ में वृहद् भूगोल का बारीकी वर्णन किया है तथा उतरमेघ में अलकापुरी तथा यक्षिणी के सौंदर्य का बड़े ही साहित्यिक ढंग से वर्णन किया है। इससे यह ज्ञात होता है कि कालिदास को साहित्य के मर्म के साथ-साथ भूगोल का बड़ा अच्छा ज्ञान था।

कालिदास ने अपने पूर्वमेघ में पर्वत, पठार, एवं नदियों का सुचिता पूर्ण वर्णन करके साहित्यकार होने के साथ ही साथ भूगोल का परम ज्ञाता होने का भी एहसास दिलाया । उनकी इस प्रकार के वर्णन से यह ज्ञात होता है कि उन्होंने समूचे उत्तर एवं मध्य भारत का भ्रमण किया है। क्योंकि ऐसा वर्णन कोई प्रत्यक्ष देखी हुई घटनाओं का ही कर सकता है। इससे यह भी ज्ञात होता है कि कालिदास उत्तर में हिमालय से लेकर उत्तराखंड, उत्तरप्रदेश, मध्य प्रदेश, एवं महाराष्ट्र का भ्रमण किया। यहां पर यह भी सिद्ध होता है कि जिस प्रकार से रामायण में वनवास काल में राम और सीता अपने वनवास का समय एक स्थान पर नहीं बिताया होगा वे दण्डयकारण्डय से चित्रकूट एवं

[2] पू० मे० ।

[3] पू० मे० ।

[4] कुमारसम्भव , 7.30 / एकपिंगलगिरौ, वही,8.24 ।

[5] कु० 6.39 , पू० मे० 1.5 ।

[6] उ० मे० 8 ।

वर्तमान नागपुर के रामटेक पर्वत का भ्रमण किए थे । यद्यपि की 'विंध्य पर्वत' से लेकर दक्षिण में 'गोदावरी नदी' तक दण्डयकारण्डय का विस्तार माना जाता है । चित्रकूट में स्थित 'चित्रकूट पर्वत' वर्तमान में 'कामदगिरी पर्वत' की ही एक श्रृंखला दक्षिण में नागपुर तक फैला माना जाता है । जो कि कुछ दिन तक नागपुर में स्थित रामटेक पर्वत (जो कि राम के नाम पर ही पड़ा) पर ही व्यतीत किए होंगे । इसी प्रकार यक्ष ने भी कुबेर से प्राप्त श्राप के पश्चात भ्रमण करता हुआ (माना जाता है की यक्ष के रूप में कालिदास ने स्वंय भ्रमण किया था) रामगिरीपर्वत (वर्तमान जिसे नागपुर में स्थित रामटेक पर्वत के नाम से जाना जाता है) पंहुचा । तब तक कुछ महीने बीत गए होगे एवं कुछ महीने उन्होंने रामगिरी पर्वत पर बिताया । जहाँ पर वनवास कल में राम और सीता ने अपना निवास स्थान बनाया । उसी राम और सीता के चरण कमलो से पवित्र रामगिरि आश्रम को यक्ष ने अपने बचे हुए श्राप के दिन को काटने के लिए आश्रम बनाया –

कश्चित्कान्ताविरहगुरुणा स्वाधिकारात्प्रमत्तः
शापेनास्तङ्गमित्महिमा वर्षभोग्येण भर्तुः ।
यक्षश्चक्रे जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु
स्निग्धच्छायातरुषु वसतिं रामगिर्याश्रमेषु[7] ।।

यद्यपि की प्रसिद्ध टीकाकार रामगिरी पर्वत को चित्रकूट में होना सिद्ध करते है । लेकिन यह तर्कसंगत नहीं है क्योकि कालिदास मेघदूतम के 14वें श्लोक में मेघ को उत्तर की ओर मुख करके उड़ने को कहा है –

अर्द्रेः श्रृङ्गं हरति पवनः किंस्विदित्युनमुखीभि-
र्द्रष्टोत्साहश्चकितचकितं मुग्धसिद्धाङ्गनाभिः ।
स्थानादस्मात्सरसनिचुलादुत्पतोदङमुखः खं
दिङ्नागानां पथि परिहरन् स्थूलहस्तावलेपान् ।।[8]

और यदि रामगिरि पर्वत को चित्रकूट में होना मान लिया जाएगा तो यदि मेघ उत्तर दिशा में उड़ेगा तो आम्रकूट पर्वत एवं रेवा (नर्मदा नदी) इत्यादि यह सब नहीं मिलेंगी क्योंकि आम्रकूट पर्वत एवं नर्मदा नदी चित्रकूट के दक्षिण में पड़ेगा, इसीलिए यह सिद्ध होता है कि रामगिरि पर्वत चित्रकूट में नहीं बल्कि नागपुर से 24 मील उत्तर वर्तमान 'रामटेक पर्वत' है । मेघदूत का आरंभ इसी रामगिरि[9] पर होता है । कालिदास ने सीता और राम के निवास से इसी गिरि का पवित्र होना लिखा है ।

यदि मल्लिनाथ के मत पर ध्यान दिया जाए-

[7] पू० मे० – श्लोक – 1 ।

[8] पू० मे० – श्लोक – 14 ।

[9] रामगिर्याश्रमेषु० – पू० मे० – श्लोक – 1 ।

"जनकतनयास्नानपुण्योदकेषु"[10] तथा "रघुपतिपदैरङ्कितम्"[11] को दृष्टि में रखते हुए यह मानना पड़ेगा कि यह ऐसा कोई पर्वत है जहां वन गमन के समय राम का उससे संबंध रहा हो तथा सीता जी ने वहां स्नान किया हो, चित्रकूट में राम के ठहरने का प्रसंग वाल्मीकि रामायण में मिलता है । देखिए –

मातंगयूथानुसृतपक्षिसंघानुनादितम्
चित्रकूटमिमं पश्य प्रवृद्धशिखिरं गिरिम् ।।
ततस्तौपादचरेण गच्छन्तौ सह सीतया ।
अयं वासो भवेत् तात् वयमत्र वसेमहि ।।[12]

टीकाकार मल्लिनाथ की बात तर्कपूर्ण एवं संगत है । राम और सीता अवश्य ही चित्रकूट में निवास किए हैं, लेकिन मेरी यह भी बात अतिशयोक्ति ना होगी कि राम को 14 वर्ष का वनवास मिला था और उन्होंने पूरे दण्यकारण्य में भ्रमण करके राक्षसों का संघार किया था । इससे यह सिद्ध होता है कि राम पूरे 14 वर्ष एक जगह पर निवास करके नहीं बिता सकते, क्योंकि वे उत्तर भारत से दक्षिण/मध्य भारत तक पैदल जाकर राक्षसों का संघार करके पुनः चित्रकूट वापस रहने आना मुश्किल बात है । अतः यह सिद्ध होता है कि 14 वर्ष के वनवास काल में उन्होंने दण्यकारण्य के विभिन्न स्थानों पर अपना निवास बनाया होगा, जिनमें से एक स्थान यह (रामटेक) भी होगा जो चित्रकूट से दक्षिण एवं नागपुर से 24 मील उत्तर मध्यप्रदेश के आसपास किसी पर्वत पर अपना आश्रम बनाया होगा, जो कि उन्हीं के नाम पर 'रामटेक पर्वत' के नाम से विख्यात हो गया ।

यह बात अवश्य कही जा सकती है कि चित्रकूट में उन्होंने ज्यादा समय बिताया होगा जिससे वाल्मीकि ने अपने रामायण में अन्य स्थानों को छोड़कर चित्रकूट का ही वृहद वर्णन कर दिया होगा ।

वैसे भी यदि भौगोलिक दृष्टि से देखा जाए तो भारत की मानसूनी हवाएं दक्षिण से उत्तर की ओर चलती है । उत्तर में पहुंचने पर हिमालय पर्वत से टकराकर पूर्व से पश्चिम की दिशा में प्रवाहित होते हुए निकल जाती है, अतः कालिदास का 'मेघ' भी दक्षिण से उत्तर भारत की ओर ही चलता है ।

अतः कालिदास ने मेघ को इसी मार्ग का अनुसरण कराते हुए दक्षिण में रामगिरि पर्वत से लेकर हिमालय तक के भारत के भूगोल का निम्न वर्गीकरण के तहत वर्णन किया है –

---

[10] पू० मे० – श्लोक – 1 ।

[11] पू० मे० – श्लोक – 12 ।

[12] वा० रा०, अयोध्या काण्ड /95/12-14 ।

कैलास पर्वत – कैलाश हिमालय की एक पर्वत श्रेणी है ।इसकी शालीनता असाधारण है । पर्वतों का यह राजा है । महाभारत[13] और 'ब्रह्मपुराण'[14] में 'कुमायूँ' और 'गढ़वाल' के पर्वतों को भी कैलाश की श्रृंखला का ही भाग मानते हैं । कैलाश शिव और पार्वती का वास-स्थान समझा जाता है । जिसका उल्लेख कवि ने भी किया है[15] । कालिदास ने कैलाश को स्फटिक का बना पर्वत कहा है[16] । उस महाकवि ने उस पर्वत शिखर को निर्मल शाश्वत हिम से मण्डित माना है । कैलाश पर्वत हिमालय के उत्तर में स्थित है । यही शिव और पार्वती का निवास स्थान है । शिव के मित्र कुबेर भी यहीं निवास करते हैं । कालिदास ने यह भी स्वीकारा है कि हिमालय पर स्थित कैलाश पर्वत पर ही मानसरोवर स्थित है । जिसे ब्रह्मा अपने मन से बनाया था । इसलिए इसे मानस या ब्रह्मसर भी कहा जाता है । कालिदास ने कहा था "हे ! मेघ तुम्हारे गर्जन को सुनकर मानसरोवर के लिए उत्सुक कमलनाल के अग्र भाग के टुकड़े को मार्ग का भोजन बनाने वाले राजहंस कैलाश पर्वत तक आकाश में तुम्हारे साथी होंगे"[17]।

कर्तुं यच्च प्रभवति महीमुच्छिलीन्ध्रामवन्ध्यां
तच्छ्रुत्वा ते श्रवणसुभगं गर्जितं मन्सोत्काः ।
आ कैलासाद् बिसकिसलयच्छेदपाथेयवन्तः
संपत्पस्यन्ते नभसि भवतो राजहंसाः सहाया[18] ।।

वर्षाकाल से भिन्न समय में मानसरोवर हीम से दूषित हो जाता है और हिम से हंस को रोग लग जाता है । इसलिए वर्षा काल में ही राजहंस मानसरोवर जाते हैं तथा शरद ऋतु के आगमन के साथ ही मैदानो में आ जाते हैं ।

रामगिरि पर्वत – कालिदास ने अपने मेघदूत में 12वे श्लोक में रामगिरि[19] पर्वत का वर्णन किया है । इस श्लोक के माध्यम से कवि ने राम वनवास की कथा की ओर भी संकेत किया है कि रामचंद्र जी वनवास के समय यहां ठहरे थे इसलिए पर्वत के ढलानो पर उनके चरण चिह्न बन गए थे । इस श्लोक के माध्यम से रामगिरि कहाँ है यह जानने में सहायता मिलती है । रामचंद्र जी के चरण चिह्नों का उल्लेख करने का कवि का अभिप्राय पर्वत की महत्ता प्रदर्शित करना है । क्योंकि रामचंद्र जी महान व पूजनीय थे । इस पर्वत पर ठहरे थे, इसलिए उनके संपर्क से पर्वत पूजनीय हो गया ।

महाकवि ने मेघदूत में एक ऐसे गिरि की ओर संकेत किया है, जो प्रसंग के विचार से विंध्य श्रृंखला के दक्षिण पड़ता है और जिसे प्रसिद्ध टीकाकर मल्लिनाथ ने 'चित्रकूट' संज्ञा प्रदान की है[20] अब यदि हम मल्लिनाथ का विचार माने

---

[13] महा०, वनपर्व, अध्याय – 144,156 ।

[14] अ० 51 ।

[15] पू० में० 52,58,60, ।

[16] पू० में० 56 ।

[17] पू० में० – श्लोक – 11 ।

[18] पू० में० श्लोक – 11 ।

[19] पू० में० श्लोक – 12 \

[20] **अमुं शैलं चित्रकूतम्** – पू० में० ।

तो यह मानना पड़ेगा कि कभी मेघ को पहले चित्रकूट फिर आम्रकूट भेजना चाहता है । इससे चित्रकूट का अमरकंटक के दक्षिण में ही होना प्रमाणित होता है । परंतु मल्लिनाथ का इस गिरि को प्रसिद्ध चित्रकूट मानना असंगत है । रघुवंश के सर्ग 12 के श्लोक से तात्पर्य यह निकलेगा कि यह पार्वती भाग उस दंडकारण्य में ही पता था जिसका वर्णन चित्रकूट से पहले आया है । दंडकारण्य का विस्तार विन्द्य मेखला के उत्तर से आरंभ होकर दक्षिण में गोदावरी की घाटी में समाप्त होता है । इस प्रकार दंडकारण्य की स्थिति विन्द्य पर्वत के उत्तर दक्षिण दोनों ओर हुई ।

अब चूँकि रामचंद्र जी अपने 14 वर्ष के वनवास काल को एक जगह रह कर तो बिताया न होगा अतः वे पूरे दंडकारण्य में भ्रमण कर रहे थे । मध्यप्रदेश में नागपुर से 24 मील उत्तर में एक पर्वत है जिसे वर्तमान में रामटेक[21] पर्वत के नाम से जाना जाता है । इस स्थल का अवलोकन करने से तथा अनेक तर्कों के आधार पर यह माना जा सकता है कि राम सीता के साथ वनवास का कुछ समय यहाँ पर अवश्य बिताया होगा । मेघदूत के प्रथम श्लोक "**रामगिर्याश्रमेषु**"[22] इसी रामटेक पर्वत की ओर संकेत कर रहा है । अतः रामटेक पर्वत को ही रामगिरि मानना उचित होगा क्योंकि यहीं से जब मेघ उत्तर[23] की ओर जाएगा, तभी उसे आम्रकूट पर्वत मिलेगा । मेघदूत का आरंभ इसी रामगिरि पर्वत पर होता है । कालिदास ने सीता और राम के निवास से उस गिरि का पवित्र होना लिखा है । उस गिरि पर मेघदूत के अनुसार नमेरु वृक्षों (छायातरुओ) की छाया में कभी अनेक आश्रम थे। कालिदास के वर्णन से जान पड़ता है कि रामगिरी के समीपवर्ती निचली भूमि 'निचुल' पौधों से ढकी थी[24] ।

आम्रकूट पर्वत – आम्रकूट[25] नाम वाला पर्वत, इसका यह नाम सार्थक है, क्योंकि इसके आसपास के जंगलों में आम के वृक्ष अधिकता से पाए जाते हैं । यह विंध्याचल पर्वत का पूर्वी भाग है। यहां से नर्मदा नदी निकलती है । 'प्रोफ़ेसर विल्सन' ने इसे आधुनिक 'अमरकंटक' माना है ।कालिदास ने मेघ को अपना थकान मिटाने के लिए इस पर्वत पर ठहरने के लिए कहा है और इसकी उचाई को इसकी महानता बतलाया है । कालिदास आम्रकूट की सुंदरता का वर्णन करते हुए इसे पृथ्वी का 'तन' बताया है । भाव यह है कि आम्रकूट पर्वत के पाश्र्व भागों में पके हुए वनों के आमो का समूह है । ऊपर उठा हुआ पर्वत अपने पार्श्व भागों में पीले आमो से ढका है । उसकी चोटी पर काला मेघ स्थित होगा तो वह पर्वत देव दम्पत्तियो को पृथ्वी रूपी नायिका का स्तन प्रतीत होगा क्योंकि स्तन भी मध्य में कृष्ण तथा से विस्तृत भाग में गौर वर्ण होता है । वह पर्वत गौर वर्ण वाली तरुणी के स्तन के समान होगा । अमरकंटक को मध्य प्रदेश के वन प्रदेश की उपमा प्राप्त है । आम, महुआ और साल सहित नाना प्रकार के वृक्ष पर्वत का श्रृंगार करते हैं । अमरकंटक के जंगलों में आम के वृक्ष अधिक होने के कारण प्राचीन ग्रंथों में आम्रकूट के नाम से इस स्थान को जाना जाता है । इस पर्वत का सानिध्य से मानसिक तनाव और शारीरिक थकान दूर हो जाता

---

[21] कालिदास का भारत – भगवत शरण उपाध्याय पृष्ठ – 31 ।

[22] पू० मे० – 1 ।

[23] "**स्थानादस्मात्सरसनिचुलादत्पतोड्मुखः खं**" पू० मे० – 14 ।

[24] वहि० 24 ।

[25] **त्वामासारप्रशमितवनोपप्लव साधुमूर्ध्ना,**

वक्ष्यात्यध्वश्रमपरिगतं सनुमानाम्रकूट; ० पू० मे० – 17 ।

है । कालीदास का मेघ भी अपना थकान मिटाने के लिए अमरकंटक को ही अपना पड़ाव बनाया था । कालिदास ने लिखा कि हे ! मेघ रामगिरि पर्वत पर कुछ देर रुकने के बाद तुम आम्रकूट[26] (अमरकंटक) पर्वत जाकर रुकना । अमरकंटक ऊँचे शिखरो वाला पर्वत है । प्राकृतिक रुप से समृद्ध होने के साथ-साथ अमरकंटक का धार्मिक महत्व भी बहुत अधिक है । पुराणों में अमरकंटक का महत्त्व वर्णित है । अमरकंटक के आध्यात्मिक और धार्मिक महत्व को इस बात से समझा जा सकता है कि भगवान शिव ने धरती पर परिवार सहित रहने के लिए कैलाश और काशी के बाद अमरकंटक को चुना है । महादेव शिव की बेटी नर्मदा का उद्गम स्थल भी यहीं है । नर्मदा के साथ ही अमरकंटक, सोणभद्र और जोहिला नदी का उद्गम स्थल भी है । नर्मदा और सोणभद्र के विवाह की कथाएं भी यहां के जनमानस में प्रचलित है यद्यपि की विवाह संपन्न नहीं हो सका था । इसकी अपनी रोचक कहानी है । स्कन्दपुराण में भी अमरकंटक का वर्णन आता है । इस स्कन्दपुराण में कहा गया है कि 'अमर' यानी देवता और 'कट' यानी शरीर । यह पर्वत देवताओं के शरीर से आच्छादित है । इसलिए अमरकंटक कहलाता है । मत्स्यपुराण में अमरकंटक को कुरुक्षेत्र से भी अधिक महत्वपूर्ण और पवित्र माना गया है ।
पद्यपुराण में अमरकंटक की महिमा का वर्णन करते हुए देवर्षि नारद महाराज युधिष्ठिर से कहते हैं कि अमरकंटक पर्वत के चारों ओर कोटि रुद्रो की प्रतिष्ठा हुई है । यहाँ स्नान करके पूजा करने से महादेव रुद्र प्रसन्न होते हैं । यहाँ से निकलने वाली रेवा (नर्मदा) नदी को शिव का इतना आशीर्वाद प्राप्त है कि उसकी धारा में पाए जाने वाले शिवलिंग की स्थापना के लिए प्राण प्रतिष्ठा की आवश्यकता नहीं पड़ती । अमरकंटक के संबंध में यह भी मान्यता प्राप्त है कि जो साधू संयासी यहाँ देह त्यागता है, वह सीधे स्वर्ग को प्राप्त होता है ।

अमरकंटक (आम्रकूट) का महत्त्व जीवनदायिनी नर्मदा के बिना अधूरा है । अमरकंटक पर्वत की ऊंचाई समुद्र तल से लगभग 3500 फिट है । कालिदास ने भी मेघदूत में इसकी ऊंचाई[27] को स्वीकारा है ।

विन्ध्य (विन्ध्याचल पर्वत) – विन्ध्याचल पर्वत आम्रकूट पर्वत के उत्तर में स्थित एक पर्वत श्रंखला है । जो भारतवर्ष को उत्तर एवं दक्षिण दो भागो में विभाजित करती है । यहीं से उत्तरापथ और दक्षिणापथ के राजमार्ग उत्तर और दक्षिण की ओर चलते थे । वस्तुतः पारियात्र का वह पूर्वी विस्तार जहाँ से बेतवा की सहायक नदी 'धसान' निकली है, विन्द्य पर्वत है । इसी विन्द्य पर्वत को कालिदास ने मेघदूत के निम्न श्लोक में 'विन्ध्यपाद' के नाम से बताया है –

स्थित्वा तस्मिन् वनचरवधूभुक्तकुन्जे मुहूर्तं
तोयोत्सर्गद्रुततर गतिस्तत्परं वर्त्म तीर्णः ।
रेवां द्रक्ष्यस्युपलविषमे <u>विन्ध्यपादे</u>[28] विशीर्णं
भक्तिच्छेदैरिव विरचितां भुतिमङ्गे गजस्य ।।

[26] पू० में० -

[27] पू० में० – श्लोक – 17 ।

[28] पू० में०, श्लोक – 19 ।

विन्ध्यपाद को अब आधुनिक काल में 'सतपुड़ा' के नाम से जाना जाता है । यह ताप्ती आदि नदियों का उद्गम स्थल माना जाता है । विन्ध्य सात 'कुलपर्वतों'[29] में से एक है ।अन्य हिन्दू भौगोलिक भी इसे विन्ध्य पर्वत ही कहते हैं[30] । यह पर्वत नर्मदा और ताप्ती के बीच है । पारियात्र भी एक पर्वत है , चंबल और बेतवा के उद्गम से पश्चिम की ओर दौड़ने वाली विन्ध्यश्रृंखला का भाग है । अरावली और राजपूताना की दूसरी पहाड़ियां भी 'पारियात्र' में ही शामिल है । पाथर-श्रृंखला भी इसी का भाग है और यह नाम संभवत पारियात्र का अपभ्रंस है । 'श्री जयचंद्र विद्यालंकार' के अनुसार पारियात्र विन्ध्य श्रृंखला का वह भाग है, जहां से पार्वती और बनास से लेकर बेतवा तक की नदियां निकलती है । पारियात्र भी कुलपर्वतो में से एक ही है।

विन्ध्याचल पर्वत श्रृंखला का पश्चिमी अन्त गुजरात में पूर्व में वर्तमान राजस्थान व मध्य प्रदेश की सीमाओं के नजदीक है। यह श्रृंखला भारत के मध्य से होते हुए पूर्व व उत्तर से होते हुए 'मिर्ज़ापुर' में गंगा नदी तक जाती है। इस श्रृंखला के उत्तर व पश्चिम का इलाका रहने लायक नहीं है, जो विन्ध्य व अरावली शृंखला के बिच में स्थित है, जो दक्षिण से आती हुई हवाओं को रोकती है। 'विंध्य' में सबसे प्रसिद्ध हैं यहाँ के सफ़ेद शेर। यह परतदार चट्टानों का बना हुआ है। यह पर्वतमाला उत्तर भारत को दक्षिण भारत से अलग करता है।

विंध्य पर्वत श्रृंखला मध्य भारत में एक बहुत पुरानी पर्वत श्रृंखला है। ये पहाड़ियाँ अपेक्षाकृत कम ऊबड़खाबड़ - गंगा के मैदानों और-और आकार में छोटी हैं। वे वास्तव में भारत देश के दक्कन क्षेत्र के बीच एक विभाजन बनाते हैं। विंध्य पर्वतमाला हवाओं के मार्ग को सीमित करती है, जिससे क्षेत्र काफी दुर्गम और खुरदरा हो जाता है। विंध्य रेंज की अलगअलग ढलानें उत्तर में गंगा की सहायक नदियों और दक्षिण में- विन्ध्याचल की तलहटी (विन्द्यपाद)में नर्मदा(रेवा) बहती हैं[31]। थ्रेस पर्वतमाला में बलुआ पत्थर का विशाल भंडार है, जिसका उपयोग सांची और खजुराहो के अन्य मंदिरों में बौद्ध स्तूपों के निर्माण के लिए किया जाता था।

विन्ध्यपर्वत श्रृंखला का स्थान – विंध्य पर्वत श्रृंखला मध्य भारत, मध्य प्रदेश में स्थित है, और यह 970 किलोमीटर लंबा और 910 मीटर ऊंचा है। यह सीमा गुजरात राज्य से पूर्व और उत्तर में मिर्जापुर में गंगा नदी तक जारी है ।
नर्मदा (रेवा)– नर्मदा, जिसे रेवा के नाम से भी जाना जाता है, भारतवर्ष की पवित्र सात नदियों में से यह भी एक है –

---

[29] ***"महेन्द्रो मलयः सह्यदाः शुक्तिमान् ऋक्षपर्वतः,***
विन्ध्यश्च पारियात्रश्च सप्तैते कुलपर्वताः" ॥
- ***मार्कण्डेयपुराण 57, 10-11 ।***

[30] वराहपुराण, अ० 85 ।

[31] ***"रेवां द्रक्ष्यस्युपलविषमे विन्ध्यपादे विशीर्णां"***
- ***पू० मे०, श्लोक – 19 ।***

गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती ।

नर्मदे सिन्धु-कावेरी जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ।।[32]

यह मध्य भारत की एक नदी है और भारतीय उपमहाद्वीप की पांचवीं सबसे लंबी नदी है। यह गोदावरी नदी और कृष्णा नदी के बाद भारत के अंदर बहने वाली तीसरी सबसे लंबी नदी है। मध्य प्रदेश राज्य में इसके विशाल योगदान के कारण इसे "मध्य प्रदेश की जीवन रेखा" भी कहा जाता है। यह उत्तर और दक्षिण भारत के बीच एक पारंपरिक सीमा की तरह कार्य करती है। यह अपने उद्गम से पश्चिम की ओर 1,312 किमी चल कर खम्बत की खाड़ी, अरब सागर में जा मिलती है।

नर्मदा, मध्य भारत के मध्य प्रदेश और गुजरात राज्य में बहने वाली एक प्रमुख नदी है। कालिदास ने इसे विन्द्याचल की तलहटी में फैली हुई बताया है –

"रेवां द्रक्ष्यस्युपलविषमे विन्ध्यपादे विशीर्णा"[33]

इस नदी की उत्पत्ति आम्रकूट पर्वत (अमरकंटक पहाड़ी) से हुई है। इसकी लम्बाई प्रायः 1312 किलोमीटर है। यह नदी पश्चिम की तरफ जाकर खम्बत की खाड़ी में गिरती है।

सन्दर्भग्रन्थ सूची

1. मेघदूतम् – डॉ विजेन्द्र कुमार शर्मा - साहित्य भण्डार, मेरठ 2016 ।
2. कालिदास का भारत – भगवतशरण उपाध्याय, भारतीय ज्ञानपीठ नयी दिल्ली 2016 ।
3. जलवायु विज्ञान – प्रो० सविन्द्र सिंह, प्रयाग पुस्तक भवन इलाहबाद, 2008 ।
4. मेघदूतम् – डॉ० जयशंकर त्रिपाठी, अक्षयवट प्रकाशन, इलाहबाद, 1996 ।
5. कालिदास ग्रंथावली – डॉ० ब्रह्मानंद त्रिपाठी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2014
6. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण – गीताप्रेस गोरखपुर ।
7. महाभरत – रामनारायण दत्त शास्त्री, गीताप्रेस गोरखपुर, सं० 2058 ।
8. वराहपुराण – चौधरी श्री नारायण सिंह, सर्वभार वाराणसी, 1983 ।

[32] मेघदूतम् – डॉ विजेन्द्र कुमार शर्मा, टिप्पणी, पृ० 34 ।

[33] पू० में० – श्लोक – 19 ।